# ''पिता पुत्र से प्रीति रखता है''

# ( 5:19-47 )

49 ईस्वी तक, जूलियस सीज़र (अर्थात कैसर) रोम का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति बन चुका था। सेनापति और शासक के रूप में विरोधी कबीलों से जूझते और अपनी अद्वितीय योग्यता का प्रदर्शन करते हुए वह दो वर्ष तक नगर से बाहर रहा था। गाऊल में अधिक समय तक रहने के कारण रोम में वापस जाने पर कैसर और भी शक्तिशाली बन गया था जिससे उसके विरोधी घबरा गए थे।

जब कैसर को रोमी सीनेट की ओर से घर जाने का आदेश दिया गया था, तभी उसे मालूम हो गया था कि उसके शत्रु उसका विनाश चाहते हैं। घर जाने के लिए उसे रूबिकोन नदी पार करके अपनी विश्वसनीय सेना को छोड़कर जाना पड़ना था। वर्षों तक उस नदी ने एक सीमा-रेखा का काम किया था, जिसके पार कोई भी सेनापति अपनी सेना नहीं ले जा पाया था। उसके शत्रुओं को अपनी सेनाएं रखने की अनुमति मिल जानी थी, इसलिए कैसर को मालूम था कि रोम में अकेले जाना मृत्यु की ओर जाना है। इस कारण उसने अपनी सेना को रूबिकोन के पार अपने साथ रोम ले जाने का कठोर निर्णय लिया! नगर में जब यह ख़बर पहुंची कि कैसर ने ''रूबिकोन पार कर ली है'' तो हर किसी को मालूम हो गया था कि गृह युद्ध शुरू हो गया है। वह रोमी सीनेट के विरोध में काम कर रहा था और उसके शत्रु जल्दी से नगर छोड़कर भाग गए। दो महीनों में ही जूलियस सीज़र [अर्थात कैसर] ने हर तरह के विरोध को दबा दिया और इटली को अपने कब्जे में कर लिया। इस कहानी के कारण ही, ''रूबिकोन को पार करना'' आज भी किसी ऐसे निर्णय को व्यक्त करने के रूप में इस्तेमाल किया जाता है जिसे वापस नहीं लिया जा सकता हो या जिसे बदला न जा सकता हो।

यूहन्ना रचित सुसमाचार में यहां तक हम यीशु की कहानियों तथा लोगों के साथ उसके व्यवहारों को देख रहे हैं। हमें उसे लोगों को दुखों से चंगा करते, उन्हें सांत्वना देते और जीवन की ओर ले जाते देखकर अच्छा लगता है। अध्याय 5 के आरम्भ में, यीशु ने एक लंगड़े आदमी को चंगा किया था और यहूदी अगुओं द्वारा उसका विरोध होने लगा था। पवित्र

शास्त्र के हमारे भाग यूहन्ना 5:19-47, में कहानी नहीं है। इसके बजाय इसमें शिक्षा का एक भाग है जिसमें यीशु केवल बातें कर रहा है। हमें किसी और वृत्तांत को ढूंढ़ने की जल्दी में इस की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि यहां बहुत ही निर्णायक बात हो रही थी अर्थात यहां पर *यीशु ''रूबिकोन को पार कर रहा'' था।*

यीशु इन आयतों में, यह कहते हुए कि ''यह युद्ध है'' सब लोगों में ऐलान कर रहा था! जिस आवेश से उसने इस अध्याय के पहले भाग में काम किया था, उससे वह यहूदियों को आसानी से निकाल सकता था या यहूदियों के क्रोध को शांत कर सकता था। इसके विपरीत, यह जानते हुए कि दूसरी ओर क्रूस पर चढ़ाया जाना उसकी प्रतीक्षा कर रहा है, उसने ''रूबिकोन को पार किया।'' यह पाठ स्वाभाविक रूप से तीन भागों में बंट जाता है, इन सब भागों में यीशु ऐसा स्पष्ट ऐलान करता है जिस कारण अधिकारी क्रोध में आ गए और अन्ततः उन्होंने उसे क्रूस दे दिया।

## पिता के साथ एक होने का दावा (5:19-23)

मेरी शक्ल अपने पिता से बहुत मिलती-जुलती है, विशेषकर मेरी आवाज तो हू-ब-हू उनके जैसी ही है। धन्यवाद देने के एक दिन, मेरे कुछ मित्रों ने छुट्टी के दिन मेरे माता-पिता को अपने घर बुलाने के लिए मेरे घर फोन किया। जब मैंने फोन उठाकर बात की, तो दूसरी ओर से बात करने वाले ने पूछा, ''डर्ले (मेरे पिता का नाम) बोल रहे हैं?'' मैंने कहा, ''नहीं, मैं ब्रूस बात कर रहा हूं।'' अनुमान लगाते हुए उन्होंने उत्तर दिया, ''ब्रूस, तुम्हारी आवाज तो बिल्कुल तुम्हारे पिता जैसी है!''

हमारी न केवल आवाज ही मिलती-जुलती है बल्कि पिछले कुछ समय से लग रहा है कि जो कुछ हम कहते हैं वह भी आम तौर पर एक जैसा ही होता है। हाल ही में मेरी मां हमारे साथ एक सप्ताह तक रही जबकि मेरे पिता शिकार के लिए नगर से बाहर गए हुए थे। मैं गिनकर नहीं बता सकता कि उस सप्ताह के दौरान, मेरी किसी बात के बाद, मेरी पत्नी और मेरी मां ने एक दूसरे की तरफ देखकर कितनी बार कहा होगा, ''यह बिल्कुल अपने बाप की तरह बातें करता है!'' इसके बाद आम तौर पर यह जवाब होता था, ''इससे सावधान रहना चाहिए, है कि नहीं?''

डैडी और मेरी बातें एक दूसरे से मिलती तो हैं, फिर भी हम अलग हैं। डैडी एक इंजीनियर हैं जबकि मैं एक प्रचारक हूं। हमें किसी दिन अकेले छोड़ दें तो आप सम्भवतः उन्हें कुछ बनाते या तैयार करते पाएंगे, जबकि मुझे कहीं कोई किताब पढ़ते हुए। हम दिखने में एक जैसे लगते हैं, परन्तु हैं अलग। अपने और अपने पिता के बीच जिस सम्बन्ध की यीशु ने बात की थी उसमें उन असमानताओं के बिना जिनकी हम स्वाभाविक तौर पर अपेक्षा करेंगे, पिता और पुत्र के बीच होने वाली सभी समानताएं थीं।

परमेश्वर को अपना पिता कहकर यीशु अपने बारे में यह दावा कर रहा था जिससे यहूदी अगुवे क्रोधित हो गए। लंगड़े आदमी को चंगा करने के बाद, जब यीशु के विरोधियों ने उसे मारना चाहा, तो उनका क्रोध इसलिए था ''कि वह न केवल सब्त के दिन की विधि

को तोड़ता है, बल्कि परमेश्वर को अपना पिता कह कर, अपने आप को परमेश्वर के तुल्य ठहराता था'' (5:18)। यह कथन न केवल उत्तेजित करने वाला बल्कि यीशु के संदेश तथा उद्देश्य का मुख्य भाग भी था।

यूहन्ना की पुस्तक में परमेश्वर को 122 बार ''पिता'' कहा गया है। यीशु के लिए, परमेश्वर का पुत्र होने का अर्थ था कि ''जिन जिन कामों को पिता करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है'' (5:19)। यीशु जब पृथ्वी पर था, तो पिता से उसका सम्बन्ध निकट का था, प्रेम पर आधारित उनमें पूरी बातचीत होती थी। मेरे अपने पिता से कई मतभेद हैं, परन्तु पिता और पुत्र में कोई मतभेद नहीं है। बेशक त्रिएकत्व के कामों में वे अलग-अलग हैं, परन्तु उनका चरित्र, पाप के प्रति उनका निर्णय, उद्देश्य तथा मन एक हैं। अन्य शब्दों में, पिता और पुत्र में पीढ़ी का कोई अन्तर नहीं है!

यीशु ने कहा था कि पिता और पुत्र काम करने में (5:19, 20), जीवन देने की अपनी योग्यता में (5:21) और महिमा के योग्य होने में (5:23) एक समान हैं। यहूदी अगुवे ऐसे दावों को परमेश्वर की निन्दा मानते थे और इन्हीं दावों के कारण अन्ततः यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया था। ऐसी बातें कहकर, यीशु जानता था कि वह अपने विरोधियों के खिलाफ आत्मिक युद्ध का ऐलान कर रहा है।

## उनके ईश्वरीय उद्देश्य का दावा (5:24-29)

5:24-29 में, यीशु ने दो स्पष्ट दावे किए जिससे उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में अलग पहचान मिली। *पहले, उसने अपने आप में जीवन होने और जीवन देने वाला होने का दावा किया:*

> मैं तुम से सच सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है, अनन्त जीवन उसका है, और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। मैं तुम से सच सच कहता हूं, वह समय आता है, और अब भी है, जिस में मृतक परमेश्वर के पुत्र का शब्द सुनेंगे, और जो सुनेंगे वे जीएंगे। क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे (5:24-26)।

पिता को महान जीवन दाता के रूप में देखा जाता था, इसलिए यह दावा करने का अर्थ फिर से ''अपने आपको परमेश्वर के तुल्य ठहराना'' था (5:18)।

*दूसरा, उसने समय के अन्त में न्याय करने वाला होने का दावा किया:*

> बरन उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है, इसलिए कि वह मनुष्य का पुत्र है। इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के

> लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे (5:27-29)।

उसने दावा किया कि एक दिन उसकी आवाज सुनकर मुर्दे ''जीवन के पुनरुत्थान के लिए'' या ''दण्ड के पुनरुत्थान के लिए'' जी उठेंगे (आयत 29)।

यीशु द्वारा किया गया दण्ड का उल्लेख पहली शताब्दी के श्रोताओं की तरह आधुनिक श्रोताओं को भी अच्छा नहीं लगता। अन्तिम न्याय की धारणा को समाज आम तौर पर ठट्ठे में उड़ाता है और बहुत से मसीही इसे अप्रिय होने के कारण नज़रअंदाज़ कर देते हैं। ये आयतें हमें स्मरण कराती हैं कि यीशु ने न्याय के विषय में स्पष्ट बताया है। सच तो यह है कि नये नियम में यीशु ने न्याय के सम्बन्ध में किसी भी अन्य विषय से अधिक बताया है। उसकी शिक्षा के इस भाग से दूर रहने का अर्थ एक व्यापक सच्चाई से इन्कार करना और पवित्र जीवन जीने के लिए शक्तिशाली प्रेरणा से अपने आपको अलग करना है। इसके अतिरिक्त, समय के अन्त की शिक्षा के बिना, कलीसिया में उत्साह नहीं मिलेगा। यदि हम न्याय के दिन से अपने आपको नहीं जोड़ते, तो हमें समुद्र पार या अगली गली में सुसमाचार को सुनाने की प्रेरणा नहीं मिलेगी!

अपने ईश्वरीय उद्देश्य के बारे में यीशु के दावों के कारण सुनने वाले इस बात पर ज़ोर देने से कि वह कौन है उसकी ओर ध्यान देने लगे कि वह क्या कर रहा है। परमेश्वर का पुत्र होने के उसके दावों से परमेश्वर के काम के प्रति उसका समर्पण माना गया। पिता के काम करने का दावा करके, यीशु यहूदी अगुओं का सामना करता रहा। इसके बाद, तो पीछे मुड़ने की कोई बात ही नहीं थी!

## उसके गवाहों का दावा (5:30-47)

आपके विश्वास का कि यीशु ही मसीह अर्थात परमेश्वर का पुत्र है, आधार क्या है? यदि आपको किसी न्यायालय में अपने विश्वास की गवाही देने के लिए बुलाया जाए तो आप इस प्रश्न का कि ''आप विश्वास क्यों करते हैं?'' उत्तर कैसे देंगे। रवि जकर्यास नामक एक आधुनिक अपोलोजिस्ट ने हाल ही में कहा है, ''हम स्नातक स्तर के संदेही संसार में रहते हैं। इससे कम जवाब उसे संतुष्ट नहीं करेगा। हमें संसार के जटिल प्रश्नों का उत्तर देने के लिए तैयार रहना चाहिए।''[1] यह पूछने पर कि कुछ प्रसिद्ध नास्तिकों की निगरानी में कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में अतिथि विद्वान के रूप में पद प्राप्त करने पर उसका क्या निर्णय है, जकर्यास ने यह उत्तर दिया:

> सुसमाचार का अधिकतर प्रचार दुखी लोगों में होता है। परन्तु हम उन असंख्य लोगों तक कैसे पहुंचते हैं जिन्हें परमेश्वर की कोई आवश्यकता नहीं लगती? इस बात से मुझे अपने समय के सबसे अच्छे नास्तिक विचारों के अधीन अध्ययन करने की आवश्यकता का अहसास हुआ ताकि मैं समर्थनीय और ज़ोरदार तर्कों से उन्हें जवाब दे पाऊं। मैं विचारक अर्थात ईमानदार नास्तिक के लिए जिसे मैं

संतुष्ट मूर्तिपूजक कहता हूं एक सुसमाचार प्रचारक बनना चाहता था।[2]

पवित्र शास्त्र के हमारे इस भाग में, यीशु ने एक अच्छे वकील की तरह परमेश्वर के पुत्र के रूप में अपनी पहचान बताने के लिए गवाह नियुक्त किए। पहले तो, उसने *स्वयं पिता* की गवाही की बात की (5:32, 37)। उसके बाद, *यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले* की गवाही थी (5:33)। आज शायद हमें यूहन्ना की गवाही महत्वहीन लगे, परन्तु पहली शताब्दी में यह गवाही उस समय की एक महान हस्ती की गवाही थी। यीशु ने पुत्र होने के *अपने आश्चर्यकर्मों* को ही अपना गवाह बताया (5:36)। यीशु का चौथा गवाह *पवित्र शास्त्र* था (5:39)। इन सब गवाहों ने मिलकर यीशु के दावों के पक्ष में एक ज़ोरदार केस तैयार किया था।

यीशु ने यहूदी अगुओं के धर्मशास्त्र में से ढूंढ़ने की विडम्बना की ओर ध्यान दिया कि वे धर्मशास्त्र के लक्ष्य अर्थात स्वयं यीशु मसीह की गवाही से ही चूक रहे थे! मैंने हाल ही में अटलान्टा, जॉर्जिया में एक चर्च बिल्डिंग के प्रवेशद्वार के निकट दीवार पर लटकती एक तस्वीर के बारे में पढ़ा। यह तस्वीर जो कि यीशु का एक चित्र है, कोरिया की सेना के कुछ अधिकारियों द्वारा दान की गई थी। अपने झुंड की रखवाली करते हुए अच्छे चरवाहे के रूप में यीशु के चित्र को पहचानने के लिए उसकी ओर केवल एक सरसरी नज़र ही काफी है। तस्वीर के पास आने पर, पता चलता है कि कलाकार ने इस तस्वीर को नये नियम के सभी शब्दों का इस्तेमाल करते हुए बनाया है! परन्तु जब देखने वाला उन छोटे-छोटे अक्षरों को देखने के लिए पास आता है, तो वह तस्वीर को देख नहीं पाता। यहूदी अगुओं के साथ भी यही हुआ था! उन्होंने यीशु की बातों को बढ़ा चढ़ाकर पेश किया और भूल गए कि उस सारे काम से क्या संकेत मिलता था!

अपने पक्ष में यीशु ने अन्तिम गवाह मूसा को बताया था (5:46)। यीशु के विरोधियों ने उसे इस महान व्यवस्था देने वाले के शत्रु के रूप में देखा था, परन्तु यीशु ने कहा, ''यदि तुम मूसा की प्रतीति करते, तो मेरी भी प्रतीति करते, इसलिए कि उस ने मेरे विषय में लिखा है'' (5:46)। यदि इससे पहले कोई संदेह था तो यीशु ने इन दावों के साथ निर्णायक ढंग से ''रूबिकोन को पार कर लिया।'' परमेश्वर पिता, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले, अपने कामों, धर्म शास्त्र, और मूसा के बारे में ये बातें कहकर यीशु पलट नहीं सकता था!

## सारांश

आज, अधिकतर लोग सच्चाई के पक्ष में कड़ा स्टैण्ड नहीं लेते। हर बात में बहुवाद एक बड़ी सांस्कृतिक शक्ति है जो पूर्ण सच्चाई की धारणा से दूर और हर बात में सापेक्षवाद के पक्ष में एक लहर है। सब लोगों तथा सब धर्मों को अपनी जगह ठीक होने के रूप में देखा जाता है। हमें बताया जाता है कि हमारा काम जीवन को दूसरों के परिप्रेक्ष्य से देखकर उनके विचारों को स्वीकार करना है। धर्म शास्त्र के इस भाग में हमने अध्ययन किया है कि यीशु हमारी दुनिया में पैर रखकर, सार में कहता है, ''मेरे लोगों को सबका आदर करना चाहिए, सबसे प्रेम करना चाहिए, और सब लोगों को समझने की कोशिश करनी चाहिए। परन्तु कुछ ऐसे सिद्धांत हैं जिन्हें

छोड़ा नहीं जा सकता। कुछ बातें सच्चाई हैं और उन्हें पूर्ण सच्चाई के रूप में प्रचारित भी किया जाना चाहिए, चाहे कोई उनके बारे में कुछ भी सोचता हो।''

''बाइबल के व्याख्याकर्ताओं के राजकुमार'' जी. कैम्पबेल मॉर्गन ने एक बार धर्म शास्त्र के इस भाग के विषय में कहा था, ''मानवीय स्तर पर, जो कुछ यीशु ने उस दिन किया और जो कुछ उसने उस दिन कहा उसका दाम उसका जीवन था। उन्होंने उसे कभी क्षमा नहीं किया।''[3] इसे यह कहने का दूसरा ढंग है कि अध्याय 5 में यीशु ने ''रूबिकोन को पार किया।'' हमें उसके साथ पार करना ही पड़ेगा।

---

पाद टिप्पणियां

[1]रवि जकर्यास, ''रीचिंग द हैप्पी पैगन्स,'' *क्रिश्चियनिटी टुडे* (14 नवम्बर 1994), 18. [2]वहीं। [3]लियोन मॉरिस, *एक्सपोज़िटरी रिफलेक्शंस ऑन द गॉस्पल ऑफ़ जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1988), 193.